ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 267-269
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

# बालमनोविज्ञान : शिक्षा मनोविज्ञान के सन्दर्भ में

देवेंद्र कुमार
सहायक प्रोफेसर– आई0टी0ई0 कॉलेज, मोदीनगर, गाजियाबाद (उ0प्र0), भारत

Received-15.06.2023, Revised-21.06.2023, Accepted-25.06.2023 E-mail: devendrakumarnimesh@gmail.com

***सारांशः*** *मानव विज्ञान की एक शाखा है बाल मनोविज्ञान जिसका एकमात्र संबंध बाल जीवन के विभिन्न पहलुओं से हैं। बाल मनोविज्ञान समर्थक या विधायक विज्ञान है, जो बच्चों की शारीरिक और मानसिक विकास के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन जन्म काल से परिपक्वता तक करता है। मनोविज्ञान इसमें बच्चे के विकास का ही अध्ययन किया जाता है। बाल मनोविज्ञान का बाल साहित्य से गहरा संबंध है। शिक्षा मनोविज्ञान तब उत्ष्ट माना जाता है जब वह बाल मनोविज्ञानो पर आधारित होता है। अतः बाल मनोविज्ञान की समझ रखने वाले साहित्यकार ही शिक्षा मनोविज्ञान लिख लिख सक्ता सकता है। बालक की विभिन्न आर्जित तथा जन्मजात प्रवृत्तियों का अध्ययन करते समय देखा गया कि बाल साहित्य का अप्रत्यक्ष रूप से उनके विकास में अत्यधिक योगदान होता है। शिक्षा मनोविज्ञान के मनोवैज्ञानिक योग के कारण बालक के व्यक्तित्व निर्माण में असाधारण महत्व होता है ।*

***कुंजीभूत शब्द– बाल मनोविज्ञान, मूलप्रववृत्तियाँ, संवेग, चेतनावस्था, अवधान, परिपक्वता, अध्ययन, साहित्य।***

मानव के समूचे जीवन की आधारशिला बाल्यावस्था में ही रखी जाती है। बाल्यावस्था में उसके जीवन को विकास की सही और सन्तुलित दिशा मिलनी चाहिए। तभी स्वस्थ मानव जीवन निर्मित हो सके। प्राचीन काल से ही बचपन की महत्ता समझी जाती रही है। फिर भी आधुनिक जीवन में बाल–मनोविज्ञान के जन्म और विकास से यह क्षेत्र विस्तृत हो गया है। बाल मनोविज्ञान को आज के युग की आवश्यकता कहा गया है। मनोविज्ञान व्यवहार का विज्ञान होता है और व्यवहार का संबन्ध अन्तर्जगत और बर्हिजगत दोनों से ही है। बालमनोविज्ञान बालक के मानसिक और शारीरिक दोनों के ही विकास का अध्ययन प्रस्तुत करता है। विकास की यह प्रक्रिया विभिन्न मानसिक और शारीरिक परिवर्तनों के फलस्वरूप होती है। बालक जन्म लेते समय उसके क्रियाकलाप चेतन मन पर आधारित होते है। विकास के साथ उसका अवचेतन–मन तथा अचेतन मन भी विकसित होता है। जिनका शिक्षा मनोविज्ञान से गहरा संबन्ध है। शिक्षा मनोविज्ञान में प्रतीकों के अध्ययन से पहले मनोविज्ञान के कुछ उन विशेष पहलुओं को समझना आवश्यक है। बालक के शारीरिक तथा मानसिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है। जैसे– चेतन मन, अचेतन मन, संवेग स्मृति, कल्पना, संखिना, व्यक्तित्व वंशानुक्रम और वातावरण आदि मन की विभिन्न अवस्ताएँरू–मनोवैज्ञानिक मन की तीन अवस्ताएँ माने जाते हैं चेतनावस्था, अवचेतनावस्था, एवं अचेतनावस्था। चेतनावस्था–यह मन की एक विशेष अवस्था होती है। वर्तमान ज्ञानात्मक अनुभव ही चेतना है। चेतनावतस्था मन की बाहरी अवस्था है। जिसका हमें ज्ञान रहता है और हमारी अनुभूति तथा ध्यान का विषय होती है। संक्षिप्त रूप से मन की चेतनावस्था वह है, जिसमें संवेदन, प्रत्यक्षीकरण, चिन्तन आदि मानसिक प्रक्रियाएँ होती है।

जगदानन्द पाण्डेय–मनोविज्ञान परिचय अवचेतनावस्था – यह चेतन और अचेतन मन के बीच की मानसिक अवस्था होती है। इसमें अनुभव चेतना केन्द्र के समीप ही अस्पष्ट रूप में उपस्थित होती है। इन अनुभवों पर हमारी चेतना केन्द्रित केन्द्रित नहीं नहीं रहती। रहती। इसलिए इसलिए इसका हमें ज्ञान नहीं रहता, थौड़ा सा मानसिक प्रयत्न करने पर इन अनुभवों को हम चेतना में ला सकते हैं। हमारी आदतें रूचि, कल्पना, स्मृति, स्थायी भाव, तथा संवेग आदि अवचेतना सदैव मौजूद रहती है। अचेतनावस्था– यह मन की आन्तरिक अवस्था है, जिसका निर्माण मूलप्रवृत्तियों के दमन या इच्छाओं के अवरोध के कारण होता है। चेतन मन अपने क्षेत्र से बाहर निकाल देने वाले सारे अनुभव अवचेतन में एकत्रित रहते है। चेतन मन से ही अचेतन मन निर्मित होता है। मानव मन के अधिकांश भाग अचेतन है, जो छिपकर या अव्यक्त रूप से हमारे व्यवहारों को प्रभावित करता है। संघर्ष या दमन के कारण जो विचार चेतन मन में आते हैं, उनको चेतन मन अपनी सीमा से हटा देना चाहता है, परन्तु उनमें सफल नहीं होता और इसकी प्रक्रिया यह होती है कि वे विचार अचेतन मन में चले जाते हैं। अचेतन मन में ये विचार भावना – ग्रन्थि के रूप में अपना स्थायी प्रभाव रखते हैं। चेतन, अवचेतन तथा अचेतन मन के विश्लेषण के बाद, शिक्षा मनोविज्ञान पर इनका क्या प्रभाव है, इसका अध्ययन भी आवश्यक है। शिक्षा मनोविज्ञान में बालक के अचेतन मन से संबन्धित भावनाओं का सबसे अधिक महत्व होता है। क्योंकि अचेतन मन बालक के प्रत्येक प्रकार के व्यवहार को संचालित करता है और जीवन का निर्देशन करता है। यदि बालक की भावनाओं या इच्छाओं का दमन किया जाता है तो वे भावनाएँ अचेतन मन में पहुँचकर कुण्ठाएँ और ग्रन्थियाँ बन जाती है। इससे बालक हठी, उद्ण्डी, और विकृत मानसिक स्वास्थ्य वाले हो जाते है। शिक्षा मनोविज्ञान में बालक के अचेतन मन की भावनाओं का उचित परिष्कार हो और उन्हें अच्छी दिशा दी जा सके।

**2. सहज–क्रियाएँ–** मनोविज्ञान मानवीय व्यवहार का विज्ञान है। परिवेश से प्राप्त उत्तेजना के कारण होनेवाली प्रक्रिया व्यवहार है। इस व्यवहार की अभिव्यक्ति मनुष्य की भावात्मक, ज्ञानात्मक और क्रियात्मक आदि विभिन्न क्रियाओं द्वारा होती है। मनोवैज्ञानिकों ने क्रियात्मक क्रियाओं को दो भागों भागों में में विभाजित किया है। – जन्मजात या निर्विकल्प क्रियाएँ और अर्जित या सविकल्प क्रियाएँ। सहज क्रियाओं का अध्ययन जन्मजात क्रियाओं के अन्तर्गत किया जाता है।

**3. मूल प्रवृत्तियाँ–** मूल प्रवृत्तियाँ भी सहज क्रियाओं की तरह जन्मजात और स्वाभाविक होती है। इसलिए यह प्रत्येग प्राणी में

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

सामान्य रूप से पायी जाती है। इनको भी सीखने की आवश्यकता नहीं होती है। मूल प्रवृत्ति, परम्परागत या जन्मजात मनो–शारीरिक प्रवृत्ति है, जो प्राणी को किसी विशेष वस्तु देखने, उसके प्रति ध्यान देने, उसे एक विशेष प्रकार की संवेगात्मक उत्तेजना का अनुभव करने और उससे संबन्धित एक विशेष ढंग से कार्य करने या ऐसा आचरण करने की प्रबल इच्छा के अनुभव केलिए बाध्य करती है। [w-medaugall: "Soual-Pychology' pg&25, वुडवर्थ मूलप्रवृत्ती को शबिना सीखा हुआ व्यवहार कहते है। [Robert S woodworth and Donald G- Margius] "Psychology" pg-272 जेम्स के अनुसार मूल प्रवृत्ती किन्हीं विशेष उदेश्यों की पूर्ती केलिए आचरण करने की वह क्षमता है, वह क्षमता है, जिसमें न तो लक्ष्य का पूर्व ज्ञान रहती है और न उस आचरण की शिक्षा ही मिली होती है। [William James] "Text-Book of Psychology" Pg&391 स्पष्ट है कि मलप्रवृत्ती प्राणी की वह शारीरिक एवं मानसिक प्र.त्ति है जो उसे विशिष्ट परिस्थिति में विशिष्ट आचरण केलिए प्रेरित करती है।

**4. स्मृति–** पूर्ववर्ती अनुभवों पर आधारित मानसिक प्रक्रिया है स्मृति। इसको अतीत का विचारात्मक अथवा मानसिक प्रत्याहन भी कहते है। क्योंकि यह हमारे गत अनुभवों की मान्स्कि प्रतिलिपी होते है। ये हमारे विगत अनुभवों की प्र.ति या नकल होती है जो चेतन–मन में पुनः जागृत किये जाते है। डॉ. एस. रॉस के अनुसार ष्स्मृति एक नया अनुभव है जो पूर्व अनुभवों की स्थितियों द्वारा निर्धारित होता है और दोनों के बीच का संबन्ध प्रकट स्पष्ट समझा जाता है। (J-S-Ross, Groundwork of Educational Psy-pg 184) सीखे हुए अनुभवों के सीधे उपयोग कोश स्मृति कहते है. बुडवर्थ (सुरेश भटनागर द्वारा शिक्षा मनोविज्ञान,पृः 202) चेतना से एक बार हट जाने के बाद मन की पूर्व अवस्था में ज्ञान का नाम ही स्मृति है। बलबीर सिंह द्वारा मनोविज्ञान के मूल सिद्धांत, पृः 144)

स्पष्ट है कि स्मृति के द्वारा हम अपने अनुभवों को वर्तमान का विषय प्रदान करते है अर्थात् चेतना में लाते हैं। अतः स्मृति को एक ऐसी मानसिक शक्ति कहा जा सकता है जो पूर्व–अनुभवों या विषयों को पुनः चेतना में लाने में सहयोग देती है।

**5. संवेग–** सामान्य अर्थ में संवेग से तात्पर्य उत्तेजित करना है। किसी परिस्थिति विशेष में उत्तेजित हो जाने वाले व्यक्तित्व की भावात्मक मानसिक अवस्था को संवेग कहते है। संवेग वह भावात्मक प्रक्रिया है, जिसका आविर्भाव किसी परिस्थिति के प्रत्यक्षीकरण, स्मरण या कल्पना से होता है। जिसके परिणाम स्वरूप व्यक्ति में तरह–तरह के परिवर्तन होते है और वह किसी प्रकार की प्रक्रिया करता है। जगदानन्द पाण्डेय मनोविज्ञान परिचय) पृष्ठ–230 संवेग मानव की जन्मजात प्रवृत्तियों पर आधारित होते हैं। शोक, प्रसन्नता, क्रोध, भय आदि संवेग के अंतर्गत आते हैं। संवेगों का हमारी शारीरिक क्रियाओं से घनिष्ठ संबन्ध होता है। बालकों के जीवन में संवेग प्रसन्नता बढाते है तथा क्रियाशीलता का संचार करते हैं और बालकों को शक्ति प्रदान करते हैं। बालक हैं। का संवेगात्मक विकास शारीरिक तथा बौद्धिक परिपक्वता के साथ तथा शिक्षण के साथ आगे बढता रहता है। बालकों के सवेगात्मक व्यवहार को प्रभावित करने वाले मुख्य तत्व स्वास्थ्य, थकावट, पारिवारिक स्थिति आदि है। शिक्षा मनोविज्ञान अपनी विभिन्न विधाओं के माध्यम से बालकों के संवेगों पर उचित नियंत्रण रखकर उनका शोध करता है तथा स्वरूप दिशा प्रदान करता है।

**6. अवधान –** अवधान मानव चेतना की एक वरण प्रक्रिया है अथवा किसी विचार को मस्तिष्क में स्पष्ट रूप से अंकित करने की प्रक्रिया है। यह एक सतत् क्रमबद्ध प्रक्रिया है जो मस्तिष्क में स्पष्ट रूप में स्थित नाना प्रकार की विभिन्न वस्तुओं में से कभी एक को और कभी दूसरे को चेतना के ध्यान केन्द्र में लाकर उपस्थित करती है। डॉ. एस एस माथुर शिक्षा मनोविज्ञान) पृः 396 के अनुसार–अवध ाान केवल उस चेष्टा या इच्छा को कहते हैं, जिसका प्रभाव ज्ञान प्रक्रिया पर पड़ता डम्बिल के अनुसार अवधान अन्य वस्तुओं की अपेक्षा एक वस्तु पर चेतना को केन्द्रित करना रॉस के अनुसार अवधान विचार की वस्तु मन के समक्ष स्पष्ट रूप से प्रकट करने की प्रक्रिया हैश । सुरेश भटनागरद्वारा शिक्षा मनोविज्ञान चेतना को किसी वस्तु विशेष नेहम उसी वस्तु पर अपनी चेतना पर पर केन्द्रित त करना ही अवधान है। समान्य रूप से हम केन्द्रित कर सकते हैं। हैं। जिसमें हमारी रूचि होती है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार अवधान के दो भेद किये गये हैं। अनैच्छिक तथा एच्छिक अवधान अनैच्छिक अवधान व्यक्ति की मूल प्रवृत्तियों और रूचियों पर आधारित होता। ऐच्छिक अवधान स्वाभाविक मूल प्रवृत्तियों या रूचि पर आधारित न होकर अर्जित रूचि पर आधारित होता है। बालक किसी भी विषय पर अधिक समय तक अपना ध्यान केन्द्रित नहीं कर सकते हैं। क्योंकि वे स्वभाव से चंचल होते है। आयु की परिपक्कता के साथ बालक में ध्यान देने की शक्ति बढती जाती है। स्पष्ट है कि रूचि और अवधान का घनिष्ट सम्बन्ध है। शिक्षा मनोविज्ञान में यह पूरा ध्यान रखा जाता है कि बालक में मूल प्रेरणात्मक रूचि उत्पन्न की जाय और उनकी जिज्ञासा आत्मप्रदर्शन और सर्जनात्मक प्रवृत्तियों को बिना किसी दबाव के सही मार्ग की ओर परिवर्तित किया जाय। बालक का अवधान मुख्य रूप से उसकी मूल–प्रवृत्तियों पर ही आधारित होता है। है। उसमें जिज्ञासा की प्रवृत्ति प्रवृत्ति होती है। .सीखना–सीखने को विकास की प्रक्रिया कहा जाता है। यह प्रक्रिया निरन्तर और सार्वभौमिक होती है। मनोवैज्ञानिक गेट्स के अनुसार श्अनुभव के द्वारा व्यवहार में रूपान्तरण लाना सीखना वुडवर्थ के अनुसार ज्ञान और नवीन प्रतिक्रियाओं को प्राप्त करने की प्रक्रिया सीखना है।

वस्तुतः व्यवहार में विकासात्मक परिवर्तन ही सीखना है। अर्जित क्रियाएँ बालक के व्यक्तित्व का निर्माण करती है और ये अर्जित क्रियायें सीखने के फलस्वरूप ही उपलब्ध होती हैं। अतः जो क्रिया हमारे जीवन को पहले की अपेक्षा किसी तरह से भी नयें रूप में बदलती है। उसे सीखना कहते हैं। बलवीर सिंह मनोविज्ञान के मूल सिद्धान्त) पृ:125) स्पष्ट है कि सीखने की प्रक्रिया द्वारा व्यवहार में परिवर्तन होता है। सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करनेवाले तत्व–1. शारीरिक तत्व 2. मनोवैज्ञानिक तत्व और 3. वातावरण सम्बन्धी तत्व है।

**1. शारीरिक तत्व–** बालकों के सीखने की प्रक्रिया पर उनके स्वास्थ्य का गहरा असर पड़ता है। यदि बालक का कोई संवेदन

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

अंग दोषपूर्ण है तो उसे कोई भी कार्य सीखने में कठिनाई का अनुभव होगा। इसके साथ अस्वस्थ बालक शीघ्र थक जाता है। इससे भी सीखने में बाधा होती है।

**2. मनोवैज्ञानिक तत्व–** बालक प्रेरणा के आधार पर ही सीखता है। प्रेरणा ही बालक में क्रियाशीलता उत्पन्न करती है। किसी लक्ष्य की प्रेरणा से ही बालक सीखने का प्रयत्न करता है। अतः प्रेरक बालक के सीखने में बहुत सहायता करतेहै।

**3. वातावरण संबन्धी तत्त्व–** वातावरण भी बालक के सीखने पर प्रभाव डालता है। बालक में सीखने के विकास उसकी कुशलता के विकास के साथ–साथ होता है। बालक की कुशलता अभ्यास द्वारा विकसित होती है। नई–नई क्रियाओं को करना सीखता है। और उसके ज्ञान का विस्तार होता है। उसकी रचनात्मक प्रवृत्ति कल्पना तथा जिज्ञासा का उपयोग सीखने के द्वारा ही होता है। सीखने से ही बालक की क्रियाओं का विकास होता है। सीखना मानसिक विकास की उदेश्यपूर्ण प्रक्रिया है। इससे बालक की रूचियों की संतुष्टी होती है। बालक के व्यक्तित्व निर्माण उसके व्यवहार में स्थायी परिवर्तन का कार्य सीखने के द्वारा ही सम्भव है। हिन्दी बालसाहित्य बालक के सीखने की प्रक्रिया को मनोवैज्ञानिक रूप से प्ररित एवं प्रोत्साहित करता है। इसमें ऐसी घटनाओं) भावों तथा विचारों का चित्रण होता है जो बालक को प्रेरणा देते है। उसे उद्देश्यों की प्राप्ती केलिए प्रोत्साहित करते है तथा उसकी रूचि और इच्छा को बढाते हैं।

**8. खेल–** सामान्य अर्थ में खेल से तात्पर्य मनोरंजन के लिए उछल–कूद या साधारण कार्य है। मैक्डूगल के अनुसार खेल स्वयं अपनेलिए की जानेवाली एक क्रिया है। या खेल एक निरूद्धेश्य क्रिया है जिसका कोई लक्ष्य नहीं होता है।' [Medougall & "An Outline of Psychology- Pg: 171] खेल एक सामान्य तथा स्वाभाविक प्रवृत्ती होती है। यह बालक की रचनात्मक क्रियाशीलता को अभिव्यक्ती प्रदान करता है। यह बालक की मानसिक मनोवृत्ती है जो बालक के शरीर गठन और मनोविकास केलिए अत्यधिक आवश्यक है।खेल जन्मजात सहज प्रवृत्ती है। खेल स्वतंत्र और आत्मप्रेरित होता है। खेल आनन्द प्रदान करता है। खेल उदेशयहीन होता है। बालक के शरीर में आवश्यकता से अधिक एकत्रित शक्ति को व्यय करने केलिए वह खेलता है। शारीरिक विकास केलिए खेलों का अत्यधिक महत्व है। खेलों का बालक के मनोवैज्ञानिक जीवन से गहरा सम्बन्ध है। खेलों के द्वारा बालक को आत्मप्रकाशन का अवसर मिलता है। बालक की मूलवृत्तियों तथा कल्पना की अभिव्यक्ति का अवसर मिलता है। बालक के संवेगों को स्थिरता प्रदान करता है और उनके व्यक्तित्व का विकास भी होता है। खेल द्वारा बालक में मानसिक संतुलन की क्षमता आती है और उनकी मानसिक समस्याएँ सुलझती है। खेलों द्वारा वे स्वयं ही अपनी समस्याओं को सुलझाने में सफल हो जाते हैं। शारीरिक तथा मानसिक महत्व के अतिरिक्त खेलों का बालक के सामाजिक तथा नैतिक जीवन पर भी प्रभाव पड़ता है।

**निष्कर्ष–** शिक्षा मनोविज्ञान के मनोवैज्ञानिक योग के द्वारा प्रत्येक आयु वर्ग के बालक की रूचि प्रतिभा कल्पना जिज्ञासा आदि मानोभावों का क्रमशः विकास होता है। उनको उचित व स्वस्थ दिशा मिलते हैं। बालक कुंठाओं, मानसिक उलझनों और दुष्ट प्रवृत्तियों से बच जाता है और उसका बौद्धिक और मानसिक विकास होता हैं।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बाल मनोविज्ञान लालाजी राम शुक्ला नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
2. असामान्य बाल मनोविज्ञान पाण्डे जगदानंद प्रकाशकः ग्रंथ माला कार्यालय क प्रथम संस्करण 1956.
3. शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा विशंभर नाथ त्रिपाठी प्रकाशकः बाल साहित्य मंदिर प्रथम संस्करण 1954.

*****